नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

एमवाय में मासूमों का रक्त, सिस्टम के हाथ लाल

मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल इंदौर का महाराजा यशवंतराव हॉस्पिटल – आज सिर्फ बीमारियों के इलाज का केंद्र नहीं, बल्कि भयावह अव्यवस्था, लापरवाही और भ्रष्टाचार का प्रतीक बन गया है. इस अस्पताल में दो नवजात शिशुओं को चूहों ने नोच-खाकर मार डाला. सोचिए, जिन मासूमों ने अभी सांस लेना सीखा भी नहीं था, वे इस दुनिया की निर्ममता का शिकार हो गए. यह घटना मात्र लापरवाही नहीं, बल्कि मानवता का खुला अपमान और शिशु वध का जघन्य अपराध है.

करोड़ों रुपये खर्च करने के बावजूद अगर अस्पतालों से गंदगी और चूहों का आतंक खत्म नहीं हो पा रहा, तो यह सवाल उठना लाज़िमी है कि आखिर वह पैसा गया कहां? यह घटना महज प्रशासनिक असफलता नहीं, बल्कि उस कफ़न-खसोट व्यवस्था का वीभत्स चेहरा है, जिसमें गरीब की जिंदगी की कोई कीमत नहीं बची. विडंबना यह है कि इस वीभत्स हादसे पर समाज और राजनीति की चुप्पी सब कुछ बयान कर रही है. जिन संगठनों और दलों को सड़कों पर उतरना चाहिए था, वे 'पोहा-कचौरी' की राजनीति और जुलूसों में व्यस्त हैं. यह सवाल तो हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरना चाहिए. यह घटना मां अहिल्या की नगरी में हुई है, जहां करुणा और न्याय की परंपरा रही है. पर यहां न करुणा दिखी, न न्याय. सोचिए, अगर यही नवजात शिशु किसी मंत्री या बड़े अधिकारी के घर जन्मे होते और उनके साथ ऐसा हादसा होता, तो क्या व्यवस्था इतनी ही बेरुखी से चुप बैठी रहती? निश्चित ही नहीं. यही इस व्यवस्था की सबसे घृणित विडंबना है—गरीब की मौत को आंकड़ों और मुआवजे में समेट दिया जाता है. महाराजा यशवंतराव हॉस्पिटल की दुर्दशा कोई नई बात नहीं. चूहों और गंदगी की शिकायतें वर्षों से उठती रही हैं. करोड़ों रुपये की योजनाओं, सफाई बजट और दिखावटी सुधारों के बावजूद स्थिति जस की तस बनी हुई है. यहां भर्ती होना, मानो मौत को गले लगाने जैसा है. यहां आने वाला हर गरीब मरीज यह जानता है कि इलाज से ज्यादा खतरा उसे अस्पताल की गंदगी, संक्रमण और लापरवाही से है. सवाल उठता है कि जब जान बचने की कोई गारंटी नहीं, तो यह सरकारी अस्पताल आखिर किसके लिए है? और जो पैसा इसके रखरखाव के नाम पर खर्च होता है, वह किसकी जेब में जा रहा है ?

इस हादसे ने स्पष्ट कर दिया है कि व्यवस्था की उदासीनता, प्रशासन की संवेदनहीनता और समाज की चुप्पी—इन तीनों ने मिलकर मासूमों की बलि चढ़ाई है. आज भी संबंधित अधिकारियों और प्रबंधन पर कोई कठोर कार्रवाई नहीं हुई. यही असली अपराध है. अगर इस घटना पर जिम्मेदारों के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज नहीं होता, तो यह संदेश जाएगा कि इस देश में गरीबों और नवजात मासूमों की जिंदगी की कोई कीमत नहीं. यह कहना गलत नहीं होगा कि अब उम्मीद न प्रशासन से है, न सिस्टम से. न्यायालय या ईश्वर ही शायद इस व्यवस्था को झकझोर सकते हैं. लेकिन क्या समाज इतनी देर तक चुप रहेगा? अगर हम आज आवाज़ नहीं उठाएंगे, तो कल और मासूम इस काली व्यवस्था के शिकार होंगे.

यह घटना सिर्फ एक अस्पताल की विफलता नहीं, बल्कि पूरे स्वास्थ्य तंत्र पर कलंक है. यह हमें याद दिलाती है कि जब तक जिम्मेदारों पर कठोर आपराधिक कार्रवाई नहीं होगी, तब तक यह व्यवस्था नहीं सुधरेगी. संवेदनहीन नौकरशाही और भ्रष्ट तंत्र को तभी झटका लगेगा जब समाज सड़कों पर उतरेगा और न्यायालय सख्त रुख अपनाएगा. इसलिए अब सवाल पूछने का समय है—क्या इस देश में गरीब की जिंदगी की कोई कीमत नहीं? क्या सरकार सिर्फ बड़े लोगों की सुरक्षा और स्वास्थ्य की गारंटी देगी, और गरीब को मरने के लिए छोड़ देगी? अगर सचमुच ऐसा है, तो यह लोकतंत्र नहीं, निर्मम तंत्र है. महाराजा यशवंतराव हॉस्पिटल की दीवारों में गूंजती मासूमों की चीख आज हमसे यही सवाल पूछ रही है. यदि हमने इसे अनसुना कर दिया, तो कल हमारी संवेदनहीनता ही सबसे बड़ा अपराध मानी जाएगी.

पीएम विकसित भारत रोज़गार योजना

युवा शक्ति के सपनों को नई उड़ान

डॉ. मनसुख मांडविया

भारत की विकास गाथा हमेशा से उसकी श्रम शक्ति द्वारा लिखी गई है. देश की अर्थव्यवस्था को गति देने में करोड़ों श्रमिकों के समर्पण और क्षमता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, पिछले 11 वर्षों में भारत की आर्थिक प्रगति ने उल्लेखनीय प्रगति की है. वर्ष 2014 में, भारत विश्व की 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से आगे बढ़ते हुए आज चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है. भारत ने वैश्विक पटल पर अपने लिए एक उल्लेखनीय स्थान बनाया है और इसमें इसके मानव संसाधन की शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है.

इस सफलता की कहानी को बल देने वाला तथ्य यह है कि भारत के आर्थिक विकास के साथ-साथ रोजगार का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है. आरबीआई-केएलईएमएस के अनुसार, जहां 2004-2014 के बीच केवल 2.9 करोड़ रोजगार सृजित हुए थे, उसके बाद के दशक में 17 करोड़ से अधिक रोजगार सृजित हुए. औपचारिकीकरण में भी तेजी आई है, ईपीएफओ के आंकड़ों के अनुसार पिछले सात वर्षों में लगभग आठ करोड़ नौकरियां सृजित हुई हैं. भारत में सामाजिक सुरक्षा कवरेज में बढ़तोरी होना भी हमारी एक बड़ी उपलब्धि है. 2015 में, केवल 19 प्रतिशत भारतीय कम से कम एक सामाजिक सुरक्षा योजना के अंतर्गत आते थे. 2025 तक, यह संख्या बढ़कर 64.3 प्रतिशत हो चुकी है और 94 करोड़ लाभार्थी इसके दायरे में आए हैं, जिससे भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा सामाजिक सुरक्षा कवरेज देने वाला देश बन गया है. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने इस उपलब्धि को वैश्विक स्तर पर कवरेज के सबसे तेज विस्तार में से एक माना है.

> **नए भारत की नींव- हर युवा को सार्थक रोजगार मिले**
> प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना एक नीतिगत घोषणा से कहीं अधिक बढ़कर है. यह जनसांख्यिकीय लाभांश को सार्वजनिक समृद्धि में बदलने की दिशा में एक ठोस कदम है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, यह पहल विकसित भारत के विजन को साकार करने की नींव का हिस्सा है, जहां हर युवा को सार्थक रोजगार मिले, हर काम में सम्मान हो और हर युवा को अपने सपनों को साकार करने का अवसर मिले .रोजगार निर्माण सही मायने में राष्ट्र निर्माण है. इस पहल के साथ, मोदी सरकार अपनी इस प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ रही है कि कोई भी आकांक्षा अधूरी नहीं रहेगी और कोई भी युवा अवसर से वंचित नहीं रहेगा. हम सब मिलकर भारत की युवा शक्ति को नई उड़ान दे रहे हैं और उनके माध्यम से, विकसित भारत के सपने को भी नई गति प्रदान कर रहे हैं.

यह स्पष्ट है कि राष्ट्र का भविष्य न केवल जीडीपी वृद्धि की गति से, बल्कि हमारे द्वारा सृजित नौकरियों की गुणवत्ता, श्रमिकों को दी जाने वाली सुरक्षा और अपने युवाओं को प्रदान किए जाने वाले अवसरों से भी तय होगा. बढ़ते स्वचालन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से कारण बनी अनिश्चितता की स्थिति, आपूर्ति-श्रृंखला में बदलाव और दुनिया भर में नौकरियों को आकार देने वाली कई अन्य कमजोरियों की वैश्विक पृष्ठभूमि में, भारत एक जनसांख्यिकीय परिवर्तन के बिंदु पर खड़ा है.

हमारी 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है, जो एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय लाभांश है जो हमारी अर्थव्यवस्था को गति दे देता है, जबकि पश्चिमी देशों में आबादी वृद्ध होती हो रही है. वर्षों से, भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश यानी इसकी युवा शक्ति को इसकी सबसे बड़ी ताकत माना जाता रहा है. फिर भी, पिछली सरकारों के अधीन, इस क्षमता का पूरा उपयोग नहीं किया गया. अमृत काल में, जब हम 2047 तक एक विकसित भारत के विजन की दिशा में प्रयास कर रहे हैं, हमारे सामने कार्य स्पष्ट है- हमें संभावना से समृद्धि की ओर बढ़ना होगा. इस पृष्ठभूमि में, रोजगार अब केवल एक आर्थिक संकेतक नहीं रह गया है; यह सम्मान, समानता और राष्ट्रीय शक्ति का आधार है. इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने युवाओं को रोजगार योग्य बनाएं, उन्हें औपचारिक अर्थव्यवस्था में एकीकृत करें, उन्हें वित्तीय साक्षरता से लैस करें और यह सुनिश्चित करें कि वे एक मजबूत सामाजिक सुरक्षा प्रणाली द्वारा सुरक्षित हों. तभी हमारा जनसांख्यिकीय लाभ वास्तव में एक स्थायी राष्ट्रीय लाभांश में परिवर्तित हो सकता है.

इसी चुनौती का समाधान करने और आकांक्षा व अवसर के बीच के अंतर को पाटने के लिए, 15 अगस्त को लाल क़िले की प्राचीर से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना शुरू करने की घोषणा की है. शुरुआत में केंद्रीय बजट 2024-25 में प्रस्तुत और प्रधानमंत्री जी के अपने 12वें स्वतंत्रता दिवस संबोधन में घोषित यह योजना पैमाने और डिजाइन, दोनों ही दृष्टि से एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है.

-केंद्रीय श्रम एवं रोजगार तथा युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री

शिक्षक दिवस पर विशेष

शिक्षक एक ,भूमिकाएं अनेक

श्वेता नागर

सच्चा शिक्षक वही है जो छात्र को सिखाने के लिए तत्काल उसी की दृष्टि से देख सके, उसी के कानों से सुन सके तथा उसी के मस्तिष्क से समझ सके .
सच्चा शिक्षक वही है जो क्षण भर में ही अपने को हजारों व्यक्तियों में परिणत कर सके .

वास्तव में स्वामी विवेकानंद के इस कथन में ऐसे आदर्श शिक्षक को प्रस्तुत किया गया है जो एक ही समय में विद्यार्थी के साथ अपनी विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करता है . जैसे खेल या अन्य रोचक गतिविधि में शिक्षक विद्यार्थी के साथ मित्र की भूमिका में सहभागिता करता है वहीं जब वह अपने शैक्षणिक विषय पर संवाद करता है तब उसकी भूमिका मार्गदर्शक की तरह होती है और जब वह अपने विद्यार्थियों को जीवन जीने के कौशल से परिचित करवाता है या संस्कार का पाठ पढ़ाता है तब वह विद्यार्थी के माता या पिता की भूमिका में होता है .

वर्तमान समय में जहां कई बार हैरान और परेशान करने वाली दुखद घटनाएं सामने आती हैं जिसमें हम देखते हैं कि बच्चे अपने मन के भावों या अपनी समस्याओं को अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं ,और कोई गलत कदम उठा लेते हैं . यहां परिवार के साथ - साथ शिक्षक की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है . इसलिए हमें घरों और विद्यालयों में ऐसा सकारात्मक वातावरण निर्मित करना होगा जहां बच्चा बिना किसी भय के अपने मन मस्तिष्क में चल रहे किसी भी प्रकार के द्वंद, तनाव को शिक्षकों या माता- पिता को कह सके . क्योंकि तनावपूर्ण मन मस्तिष्क सीखने की प्रक्रिया को अवरुद्ध कर देता है . यानी सर्वप्रथम शिक्षक का दायित्व है कि वह विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास इस तरह करे जहां उसमें आत्मविश्वास, नैतिक मूल्य , मानवीय संवेदना, और जीवन में हर विपरीत परस्थिति में भी सकारात्मक दृष्टिकोण रखकर समस्या का समाधान खोजने की क्षमता हो . कई बार विषय को समझने में आने वाली कठिनाई भी विद्यार्थी के आत्मविश्वास को कम कर देती है जहां वह अपनी क्षमताओं का अवमूल्यन करने लग जाता है जिससे भविष्य में वह करियर का सही विकल्प नहीं चुन पाता है .

इससे जुड़ा एक उदाहरण है हमारे देश के महान वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति श्री एपीजे कलाम का . अपनी पुस्तक अग्नि की उड़ान में उन्होंने बताया कि उनके गुरु सुब्रमण्यम अय्यर उन्हें समुद्र के तट पर ले गए जहां उन्होंने उन्हें उड़ते हुए पक्षियों को दिखाकर एयरोनॉटिक्स की अवधारणा को सरलता से समझाया . इससे ही उनकी रुचि विमानन विज्ञान में हुई . यानी शिक्षक को विषय को सरलता से समझाने के लिए अनुभवात्मक कौशल का प्रयोग करना पड़ेगा जिसमें विद्यार्थी स्वयं देखकर , करकर सीखे ,और समझे .

निस्संदेह समाज में शिक्षक के लिए सदैव सम्मान का भाव रहता है ,और इसलिए प्रत्येक 5 सितंबर को हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाते आए हैं लेकिन प्रश्न यह भी है कि शब्दों से सम्मान देने के अलावा क्या अन्य व्यवसायों/ सेवाओं की तुलना में व्यावहारिक तौर पर वेतन या अन्य सुविधाओं में शिक्षक की सम्मानजनक स्थिति है ? यह विचारणीय है . नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों की स्थिति पर कहा गया है ,अध्यापक - शिक्षा की गुणवत्ता, भर्ती, पदस्थापना , सेवा शर्तें और शिक्षकों के अधिकारों की स्थिति वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिए ,और इसके परिणाम स्वरूप शिक्षकों की गुणवत्ता और उत्साह वांछित मानकों को प्राप्त नहीं कर पाता है . शिक्षकों के लिए उच्चतर दर्जा और उनके प्रति आदर सम्मान के भाव को पुनर्जीवित करना होगा . ताकि शिक्षण व्यवसाय में बेहतर लोगों को शामिल करने हेतु प्रेरित किया जा सके .

एक शिक्षक का कार्य केवल बच्चों को पढ़ाना नहीं है बल्कि बच्चे के मनोविज्ञान को पढ़ना और समझना होता है ताकि समाज और राष्ट्र के लिए शारीरिक , मानसिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ पीढ़ी को तैयार किया जा सके.

पुत्र व पार्टी मोह में धृतराष्ट्र बने केसीआर

तेलंगाना के पूर्व मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने अपने बेटे के .टी. राव का राजनीतिक भविष्य सुरक्षित रखने के लिए अपनी बेटी और विधान परिषद सदस्य के. कविता को पार्टी से निष्कासित कर दिया. यह कार्रवाई कविता के हाल के रवैये और पार्टी विरोधी गतिविधियों का आरोप लगाते हुए की गई. यद्यपि कविता ने एक समय पार्टी को आगे बढ़ाया था और उनका मीडिया मैनेजमेंट भी अच्छा था लेकिन शराब घोटाले के बाद उनकी साख गिर गई. वह सांसद बनीं लेकिन बाद में दूसरा लोकसभा चुनाव हार गईं. अब पार्टी में केसीआर के बेटे और भतीजों का वर्चस्व बढ़ गया है. कविता ने अपने फुफेरे भाइयों पूर्व मंत्री टी. हरीश राव और पूर्व राज्यसभा सदस्य जोगिनापल्ली संतोष कुमार पर कालेश्वरम प्रोजेक्ट घोटाले में लिप्त होने का आरोप लगाया. यह दोनों ही तेलंगाना की राजनीति में प्रभावशाली हैसियत रखते हैं. पार्टी कार्यकर्ताओं पर हरीश राव की मजबूत पकड़ है. कविता का गंभीर आरोप लगाना उन्हें सीधी चुनौती देने के समान था. कालेश्वरम परियोजना में घोटाला होने के आरोप की न्यायिक जांच सुप्रीम कोर्ट के अवकाश प्राप्त जज पीसी घोष की अध्यक्षता वाले आयोग ने की थी. इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट 31 जुलाई को तेलंगाना सरकार को सौंपी थी. रिपोर्ट में परियोजना निर्माण तथा अन्य मामलों में कथित अनियमितता के लिए के. चंद्रशेखर राव को जिम्मेदार ठहराया गया था. तेलंगाना हाईकोर्ट ने इस पर राहत देते हुए आदेश दिया कि 7 अक्टूबर तक केसीआर व उनके भतीजे पूर्व मंत्री टी हरीश राव पर कोई कार्रवाई न की जाए. तेलंगाना की राजनीति को लेकर यह भी चर्चा है कि के. चंद्रशेखर राव अपनी भारत राष्ट्र पार्टी का बीजेपी से गठबंधन कर सकते हैं और यदि उन पर जांच एजेंसियों का दबाव आया तो बीजेपी में भी शामिल हो सकते हैं.

कविता बीजेपी से तालमेल के खिलाफ हैं तेलंगाना में कांग्रेस की रेवंत रेड्डी सरकार को चुनौती देने के लिए बीजेपी नेतृत्व के. चंद्रशेखर राव को मोहरा बना सकता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

इस्तीफे के बाद का असर धनखड़ हो गए बेघर

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा देने के बाद से जगदीप धनखड़ बेघर बने हुए हैं. वाइस प्रेसीडेंट का बंगला खाली करने के बाद वह किसी सरकारी आवास में नहीं गए बल्कि इंडियन नेशनल लोकदल के नेता अभय चौटाला के दिल्ली के निकट छतरपुर फार्म हाउस में रहने चले गए हैं. चौटाला ने धनखड़ से कहा कि जब तक आपका घर तैयार नहीं हो जाता, आप यहां रहिए.

हमने कहा, जब तक अपना खुद का घर न हो, दिल को चैन नहीं मिलता. घर सिर्फ ईंट-पत्थर से नहीं बनता, उससे भावनाएं जुड़ी रहती हैं. घर के महत्व को फिल्मकारों ने पहचाना तभी तो इस पर कितने ही गाने लिखे गए जैसे कि- घर आया मेरा परदेसी, प्यास बुझी मेरी अंखियन की ! एक घर बनाऊंगा तेरे घर के सामने ! इमली का बूटा, बूटा का बेर, चल घर जल्दी, हो गई देर ! फिल्म घरोंदा में अपने लिए घर की तलाश करते हुए अमोल पालेकर और जरीना वहाब ने गाया था- दो दिवाने शहर में, रात या दोपहर में आबोदाना

ढूंढते है, एक आशियाना ढूंढ़ते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, घर को लेकर कहावतें भी हैं जैसे कि घर का भेदी लंका ढाए! घर की मुर्गी दाल बराबर ! बिन घरनी घर भूत का डेरा ! घर को लगी आग घर के चिराग से ! कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि घर के न घाट के ! कुछ धनवान लोग घरजमाई रखते हैं जो कोई कमाई नहीं करता और ससुराल की रोटियां तोड़ता रहता है. जब किसी आशिक का घर से मोहभंग हो जाता है तो वह गाता है- घरवालों को भी बांय-शांय बोल-बाल के आया दिल्लीवाली गर्लफ्रेंड छोड़-छाड़ के ! कभी वह गाता है- संसार नजर नहीं आता, घर-बार नजर नहीं आता, जब प्यार होता है !

हमने कहा, यदि घमंड से छुटकारा पाना है तो अपनी निंदा करने वाले को घर के पड़ोस में रखना चाहिए. मराठी में कहा गया है- निंदकाचे घर असावे शेजारी ! घर का महत्व लोगों को कोरोना काल में समझा जब उन्हें वर्क फ्रॉम होम करना पड़ा. बच्चों को भी शिक्षक घर का काम या होम वर्क देते हैं. लोग अपनी बेटी के लिए घर का अच्छा अर्थात खुशहाल वर ढूंढ़ते हैं. विघ्न डालने वाले लोगों की मानसिकता घर फूंक तमाशा देख वाली होती है. घरों की दूरी चल सकती है, दिलों की दूरियां नहीं रहनी चाहिए.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12013
- डॉ. सागर खादीवाला

1		2		3	■	4	5
	■		■	6	7		
8	9	■	10	■	11		
■	12			13	■	■	
14	■	■	15		■	16	
17		18	■		■		■
	■	19	20	■	21		
22		■	23				■

बाएं से दाएं
1.छोटी आयु में होने वाला विवाह 4. पायल के घुंघरूओं के बजने से उत्पन्न ध्वनि 6. अपाहिज 8. न्यूनता, अल्पत्व 11. एक ऋषि, एक सूर्यवंशी राजा जिनके साठ हजार पुत्र थे 12. किनारा 15. दुख, शोक, (उर्दू) 16. साफ, निर्मल 17. नदी, सरिता 19. फरियादी, मुद्दई 21. योग्यता 22. धोखा, छल (उर्दू) 23. निर्मलता, पाकीजगी

ऊपर से नीचे
1. रुकावट डालने वाला, विघ्नकारक 2. संपूर्ण संसार, समग्र ब्रम्हांड (सं.) 3. आहुति देने की वस्तु या सामग्री (सं.) 4. वेगपूर्वक उछलकर अन्य स्थान पर 9. मित्र 10. प्रभावशाली, उदंड 1 3. घुड़की 14. अमीरों के बैठने की गद्दी (उर्दू) 16. आजादी 18. जाने की क्रिया 5. मगर, घड़ियाल 7. कसाब कसौटी ज्वालामुखी से निकलने वाला पदार्थ 20. दीपक 21. बरतन, वह व्यक्ति जो किसी वस्तु को प्राप्त करने का अधिकारी हो (सं.)

Solution 12012

मे	ख	ला	■	म	नो	र	म
ह	म	ल	■	दा	■	ब	री
र	■	सा	हि	ल	■	■	चि
बा	जी	■	ला	सा	■	डं	का
न	व	■	ना	■	शा	क	■
■	वि	■	■	दी	न	■	अ
अ	ज्ञा	त	■	प	दा	सी	न
ज	न	क	■	क	र	ता	ल

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र से भेंटवार्ता होगी, आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा के क्षेत्र में अचानक यात्रा होगी, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में मन नहीं लगेगा, व्यापार व्यवसाय में व्यर्थ भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी, मित्र के कारण तनाव रहेगा, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, खर्च पर नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होने का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को मान सम्मान बढ़ेगा, शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि होगी, मान सम्मान बढ़ेगा, पारिवारिक जीवन सुखमय बना रहेगा, यात्रा का योग है,कर्क और सिंह राशि के व्यक्तियों की शत्रुओं के षडयंत्र से सतर्कता बांछनीय, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संयम से कार्य करना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का बचपन की मित्रता का लाभ प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों का साहस बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्ववान कार्यो के प्रति सजग रहने वाला होगा. परोपकारी एवं दयालु होगा. अच्छी शिक्षा प्राप्त करेगा. नौकरी में अच्छी सफ्लता प्राप्त होगी. माता पिता का पूरा ध्यान रखेगा. जन्म स्थान के पास भाग्योदय होगा.

मेष- सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल होकर खुशी मिलेगी. वाहन सुख मिलेगा. स्वास्थ्य संबंधी सावधानी रखें. मान सम्मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.

मूल्यवान वस्तु सम्हालकर रखे. उदर विकार हो सकता है. भावुकता से बचें. लाभ कम, खर्च अधिक होगा.

मिथुन- अपनों की मदद करके आप खुश रहेंगे. पारिवारिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. व्यवसायिक मामलों में विचार होगा. अतिथि आगमन होगा. लाभ होगा.

कर्क- घरेलू कामकाज में व्यस्तता रहेगी. पत्नी के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य बनेगा. कोई ऐसी बात मालुम होगी, जिससे आपको प्रसन्नता होगी.

सिंह- अपूर्ण समाचारों पर गलत निर्णय ले सकते हैं. स्वास्थ्य का ध्यान रखें. लापरवाही से कार्य करने में कष्ट हो सकता है. मांगलिक कार्य बनेगा.

कन्या- प्रेम प्रसंगों में प्रगाढ़ता आयेगी. मनचाही वस्तुओं की प्राप्ति होगी. लाभदायक अवसर प्राप्त होने का योग है. वैवाहिक कार्यो में सपफ्लता मिलेगी.

तुला- सुविधा की कमी से महत्वपूर्ण कार्य में मुश्किल होगी. भूमि भवन संपत्ति के कार्यो में सफ्लता मिलेगी. मित्रता उपयोगी रहेगी. सात्विक कार्य बनेंगे.

वृश्चिक- बातों बातों में नये काम की शुरूआत हो सकती है. आपके द्वारा किया गया प्रयास सार्थक होगा. मित्र वर्ग मदद करेंगे. कामकाजी यात्रा होगी.

धनु- अपने ही लोग उलझानें की कोशिश करेंगे. महत्वपूर्ण समस्याओं का सरलता से समाधान होगा. मांगलिक कार्य बनेंगे. प्रवास में उठाईगीरों से सावधानी रखें.

मकर- अधिकारियों से मेलजोल तरक्की में सहायक रहेगा. नये संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी. संतान पक्ष का सुख मिलेगा.

कुम्भ- विवादास्पद मामले हल होने की संभावना है. मन में प्रसन्नता रहेगी. आय में वृद्धि होगी. पूज्य व्यक्ति का सहयोग मिलने का योग है.

मीन- व्यवहारिक कार्यो में सावधानी बांछनीय. अनावश्यक विवाद को टालना हितकर रहेगा. मान सम्मान प्राप्त होगा. साहस संयम रखकर कार्य करें.

उदयकालीन ग्रह चाल

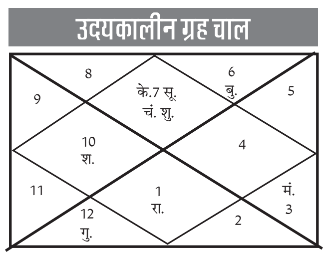

पंचांग

रा.मि. 14 संवत् 2082 भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी भृगुवासरे रात 1/41, श्रवण नक्षत्रे रात 11/16, शोभन योगे दिन 2/19, कौलव करणे सू.उ. 5/47 सू.अ. 6/13, चन्द्रचार मकर, पर्व- प्रदोष व्रत, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से चांदी, के भाव में तेजी होगी. रूई, कपास, सूत, बिनौला, खली, के भाव में वृद्धि होगी. वायदा विचार आज 12 बजकर 32 मिनिट से विशेष रूप से बाजार का रूख देखकर कार्य करें. भाग्यांक 3207 है.

SUDOKU 7145

6	3	7		1	5	4		9
	8						2	
		1		4	8			6
	6			9	7	1		
7	2						5	3
		5	6	3			9	
5			8	2		3		
	4						7	
1		3	7	5		2	6	8

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7144

5	9	4	1	7	2	6	3	8
6	8	1	4	3	5	2	7	9
2	3	7	8	9	6	1	4	5
9	2	3	7	5	1	4	8	6
4	7	6	9	2	8	5	1	3
1	5	8	3	6	4	9	2	7
8	6	2	5	4	3	7	9	1
7	1	5	2	8	9	3	6	4
3	4	9	6	1	7	8	5	2